



**पितृपक्ष : आयुर्वेद और संस्कार - स्मरण,
कृतज्ञता, संयम और दान का संगम**

पूर्वजों का स्मरण मन में,
स्वास्थ्य की देखभाल
आचरण में और संस्कारों
की विरासत अगली पीढ़ी के
हाथों में
*स्वास्थ्य + संस्कार + सामाजिक
परामर्श - पिकी कुंदू

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक त्योहार और परंपरा के पीछे केवल धार्मिक विधियाँ ही नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक विशेष दृष्टि, सामाजिक जिम्मेदारी और संस्कारों की परंपरा भी छिपी होती है। पितृपक्ष इसी परंपरा का एक महत्वपूर्ण समय है।

1. **कृतज्ञता की संस्कृति:** जड़ों को न भूलना। 'पूज' केवल विद्वंगत पूर्वजों का प्रतीक नहीं, बल्कि उन पिछली पीढ़ियों का भी प्रतीक है जिन्होंने हमारे जीवन और अस्तित्व का आधार रखा। उन्होंने हमें दिशा साकार, ज्ञान, अनुभव, परंपराएँ और जीवन-मूल्य - इनका स्मरण करने का अवसर पितृपक्ष देते हैं। थ्राफ, परिण, पिंडला और अन्नदाता परिसर और क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग तरीकों से निभाए जाते हैं, पर इनका मूल है - कृतज्ञता, स्मरण, संयम और दानशीलता।

2. पितृपक्ष और आयुर्वेद: ऋषि परिवर्तन का विज्ञान पितृपक्ष सामान्यतः वर्षा के अंतिम चरण और शरद के प्रारंभ के आसपास आता है। आयुर्वेद में इसे ऋषि संधि कहा गया है - जम पाचन अग्नि (जटायुगिनि) कर्मजोर होती है। इसलि ए शत्रों में इस समय भारी, तला-भुना, तीखा भोजन वर्जित बताया गया है।

आयुर्वेद सम्मत आहार: मूंग
दाल, चावल, मौसमी सब्जियाँ
(लौकी, तोरई, परवल), उचित मात्रा
में फल, पर्याप्त गुनगुना पानी। ये
सुपाच्य, सात्विक और वात-पित्त
संतुलक हैं। हर व्यक्ति की प्रकृति अलग
है, इसलिए आहार व्यक्तिगत
पाचनशक्ति के अनुसार लें।

3. सार्त्तविक आहार और संयमः

परिवहन विशेष - राष्ट्रीय दैनिक
विश्वसनीय • निष्पक्ष

PITRU PAKSHA
VISHESH

30 September 2026 | बुधवार

पितृपक्ष : आयुर्वेद और संस्कार - स्मरण, कृतज्ञता, संयम और संस्कारों का संगम

पूर्वजों का स्मरण मना में, स्वास्थ्य की देखभाल आचरण में, संस्कारों की विरासत अगली पीढ़ी के हाथों में

परिवहन विशेष • लेख: पंकी कुंडू, सामाजिक परामर्शदाता

1) कृतज्ञता की संस्कृति:

पितृ केवल दिवंगत नहीं, पिछली पीढ़ियाँ जिन्होंने अस्तित्व को आकार दिया। श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान व अन्नदान के साथ—कृतज्ञता, स्मरण, संयम व दानशीलता को अपनाएं।

2) पितृपक्ष और आयुर्वेद:

वर्षा अंत व शरद प्रारंभ—ऋतु परिवर्तन का समय। तला-भुना, तोड़ा, भारी भोजन न करें। मूंग दाल-चावल, मौसमी सब्जियाँ, साफ पानी। ताज़ा, स्वच्छ, सुपाच्य घरेलू भोजन को प्राथमिकता दें।

3) सात्विक आहार एवं संयम:

समय पर भोजन, पर्याप्त नींद, स्वच्छता, नियमित शारीरिक गतिविधि। नशे से दूर रहें—यही स्वास्थ्य के मूल सिद्धांत है।

4) मन का स्वास्थ्य और अन्नदान:

पूर्वजों की यादें बच्चों को बताएं, भावनात्मक संबंध मजबूत करें। जन्मरतमंदों को भोजन, बुढ़ाई की सेवा, पक्षी-पशुओं के लिए अन्न, पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्य करें।

पितृपक्ष — आयुर्वेद व संस्कार के संकल्प

तर्पण — पूर्वजों का स्मरण

सात्विक आहार — स्वास्थ्य का आधार

अन्नदान व संस्कार — सेवा और विरासत

लेखिका: पंकी कुंडू | सामाजिक परामर्शदाता

संपादक: संजय कुमार बाठल | 30 सितंबर 2026

जनहित में जारी

परिवहन विशेष — राष्ट्रीय दैनिक | पितृपक्ष विशेष अंक • सतर्क रहें, स्वस्थ रहें, संस्कार अपनाएं

स्वास्थ्य का मूल पितृपक्ष में सरल और सात्त्विक भोजन की परंपरा का वैज्ञानिक अर्थ है - कुछ समय अतिरेक कम कर शरीर-मन को संयमित करना।

पाँचसूत्रः 1) समय पर भोजन 2) पर्याप्त नींद 3) स्वच्छता 4) नियमित शारीरिक गतिविधि 5) नशे से दूरी। ये ही आयुर्वेद के स्वस्थवृत्त के सिद्धांत हैं।

4. मन का स्वास्थ्य और अन्नदान:
भावनात्मक जुड़ाव पूर्वजों की यादें
साझा करना, उनके अच्छे गुण बच्चों-
नाती-पोतों को बताना - यह

Intergenerational Bonding
है। आज की तकनीक-केंद्रित जीवनशैली में परिवार का एक साथ बैठकर इतिहास जानना ही संस्कारों को आगे बढ़ाता है। इससे अकेलापन, अवसाद कम होता है और मन का स्वास्थ्य मजबूत होता है।

अन्नदान का व्यापक अर्थ - 'जो है उसे बाँटना': जरूरतमंदों को भोजन, बुजुर्गों की सेवा, वंचित बच्चों की सहायता, पक्षियों-पशुओं के लिए पानी-भोजन, पर्यावरण के लिए कार्य

निष्कर्ष - अगली पीढ़ी के लिए संदेश: पितृपक्ष केवल श्राद्ध का समय नहीं, यह स्मरण, कृतज्ञता, संयम, दान और संस्कारों का सुंदर संगम है। आयुर्वेद हमें ऋतु अनुसार आहार-विहार सिखाता है, संस्कृति कृतज्ञता सिखाती है।

“पूर्वजों का स्मरण मन में,
स्वास्थ्य की देखभाल आचरण में और
संस्कारों की विरासत अगली पीढ़ी के
हाथों में - यही पितृपक्ष का सच्चा
संदेश है।”

आज का संदेश - संगति का महत्व

परिवहन विशेष - राष्ट्रीय दैनिक | विश्वसनीय • निष्पक्ष |

सत्संग vs कुसंग - चुनाव अपका, परिणाम जीवन का!

AADHYATMA TULNATMAK SPECIAL
Date: 30 September 2026 | बुधवार

KUSANG

दुर्जन की क्षण भर की संगति घातक



- व्यवहार अशुद्ध
- भजन ज्ञान व्यर्थ
- अंधकार — कंटों भरा रास्ता

नकारात्मक संगति → भ्रम, हिंसा, पतन

SATSANG

महापुरुषों संतों वैष्णवों का संग



- वृत्ति प्रवृत्ति सुधरती है
- व्यवहार शुद्ध
- प्रकाश — कमल पथ

सकारात्मक संगति → शांति, ज्ञान, उत्थति

उदाहरण: वाल्मीकि और अंगुलिमाल का रूपांतरण — सत्संग से



वदन् ते कवि को
रामायण के रचयिता



अंगुलिमाल से हिंस्र राक्षसी
बुद्ध के शरीर से रतन बने

❖ जैसा संग वैसा रंग - डिजिटल युग में सोशल मीडिया भी संग है 📱 ⚠️

संपादक: संजय कुमार बाठला | जनहित में जारी — सत्संगति अपनाएं, जीवन सवारे

— परिवहन विशेष — आध्यात्म तुलनात्मक विशेष संस्करण —

संपादक: संजय कुमार बाठला

बुरी संगति व्यवहार को अशुद्ध करती है,
संग का प्रभाव जीवन बदल देता है
भजन-ध्यान-ग्रंथ-ज्ञान तभी आचरण में
उतरेगा जब संग शुद्ध हो - साधना में संग का
अति विशेष महत्व

आज का संदेश - मूल पाठ: बुरी संगति हमारे व्यवहार को भी अशुद्ध कर देती है। हम कितना भी भजन कर लें, ध्यान कर लें लेकिन हमारा संग गलत है तो हमारे द्वारा पढ़े गये ग्रंथ, हमारे द्वारा अर्जित ज्ञान और हमारे द्वारा सुना हुआ सत्संग कुछ भी आचरण में नहीं उतर पायेगा।

साधना के जगत में संग का अति विशेष महत्व है। व्यवहार की शुद्धि के लिए महापुरुषों का संग अवश्य होना चाहिए। आपको धनवान होना है तो धनी लोगों का संग करें, राजनीति में जाना है तो राजनीतिक लोगों का संग करें पर भक्त बनना है तो संतों, महापुरुषों और वैष्णवों का संग अवश्य करना पड़ेगा।

दुर्जन की एक क्षण की संगति भी बड़ी घातक होती है। वृत्ति और प्रवृत्ति तो संत संगति से ही सुधरती हैं। संग का ही प्रभाव था कि लूटपाट करने वाला, रामायण लिखने वाले वाल्मीकि जी बन गए। थोड़े से भगवान बुद्ध के संग ने अंगुलिमाल जैसे डाकू का भी हृदय परिवर्तन कर दिया।

संपादकीय विश्लेषण - तथ्य और
मुख्य बिंदु:

1) व्यवहार शुद्धि का पहला सूत्र - संगः शास्त्रों में कहा है - सत्संगत्वे निस्संगत्व, निस्संगत्वे निर्मोहत्वं। व्यवहार (आचरण) ग्रंथ पढ़ने से नहीं, संग से शुद्ध होता है। गलत संग में रहकर किया गया भजन भी फल नहीं देता क्योंकि बुद्धि दूषित हो जाती है।

2) यथाधर्वादी उदाहरण - जैसा संग
वैसा रंग: आपका सूत्र बिल्कुल व्यावहारिक है।
धनवान बनना है तो धनी, राजनीति में जाना है
तो राजनीतिक लोगों का संग। इसका
मनोवैज्ञानिक आधार है - Social
Learning Theory (Albert
Bandura) - मनुष्य देखकर और संग से
सीखता है। संतों का संग ही भक्ति की
प्रयोगशाला है।

3) दुर्जन संग की घातकता - एक क्षण भी भारी:
- गीता अध्याय 2, श्लोक 62-63: संगम संजायते कामः... - संग से कामना, कामना से क्रोध, क्रोध से बुद्धि नाश।

भारत में तेर्ज

मूडीज ने इस स

भारत की आयु संरचना में बदलाव शुरू हो गया है और प्रजनन दर उस स्तर से नीचे आ गई है, जिससे आबादी लंबे समय में स्थिर बनी रहती है। इससे इस सदी के उत्तरार्ध में देश की आबादी काफी उम्रदराज हो सकती है।

भारत की आयु संरचना में बदलाव शुरू हो गया है और प्रजनन दर उस स्तर से नीचे आ गई है, जिससे आबादी लंबे समय में स्थिर बनी रहती है। इससे इस सदी के उत्तरार्ध में देश की आबादी काफी उपद्रव हो सकती है। साख तय करने वाली एजेंसी मूडीज रेटिंग्स ने मंगलवार को यह बात कही।

आबादी में वृद्धि लंबे समय से आर्थिक वृद्धि और साख के लिए अनुकूल रही है, लेकिन प्रजनन दर में गिरावट अब इस तस्वीर को बदल रही है। कम श्रमिकों के कारण उत्पादन क्षमता सीमित होगी, जबकि कम परिवार और उपभोक्ताओं से मांग कमजोर होगी। इसके परिणामस्वरूप, देशों को आर्थिक वृद्धि बनाए रखने के लिए उत्पादकों पर अधिक निर्भर रहना होगा। मूडीज ने कहा कि वैश्विक प्रजनन दर 1950 में प्रति महिला 4.9 बच्चे थी जो अब घटकर करीब 2.2 रह गई है। यह 2.1 के प्रतिस्थापन स्तर से केवल थोड़ी अधिक है।

परिवहन विशेष - राष्ट्रीय दैनिक विश्वसनीय निष्पक्ष

AADHYATMA SANDESH SPECIAL

दिनांक: 30 September 2026 | बुधवार

बुरी संगति व्यवहार को अशुद्ध करती है संग का प्रभाव जीवन बदल देता है!

भजन ध्यान ग्रंथ ज्ञान तभी आचरण में उतरेगा जब संग शुद्ध हो
- महापुरुषों का संग करो

सूटपाट करने वाला वाल्मीकि बना
रामायण लेखक

अंगुलिमाल का हृदय
भगवान बुद्ध के संग से बदला

1) संगति का महत्व:

- धनवान बनना है तो धनी का संग
- राजनीति में जाना है तो राजनीति वालों का संग
- भक्त बनना है तो सेंटों महापुरुषों
वैष्णवों का संग जरूरी

2) घातक दुर्जन संग:

- दुर्जन की एक क्षण की संगति भी घातक
- वृत्ति प्रवृत्ति संत संगति से ही सुधरती है

3) उदाहरण:

- सूटपाट करने वाला वाल्मीकि रामायण
लेखक बना
- अंगुलिमाल डाकू का हृदय भगवान बुद्ध के
थोड़े से संग से बदल गया

4) संदेश:

- साधना के जगत में संग का विशेष महत्व
- व्यवहार शुद्धि के लिए सत्संग अनिवार्य

संतों की संगति में सत्संग - जीवन में शुद्धि

रिपोट विशेष संवाददाता | परिवहन विशेष संपादक:
संजय कुमार बाठला | तारीख: 30 सितंबर 2026, बुधवार
जनहित में जारी - सत्संगित

अस्स संग - अंधकार

सत्संग - प्रभवा

- तुलसीदास - रको नकुसंगति पाइ नसाईर
- कुसंगति से कौन नहीं नष्ट हुआ।
- आधुनिक विज्ञान भी कहता है - Toxic Company 1 घंटे में कोर्टिसोल (तनाव हार्मोन) 40% बढ़ा देती है।

4) संग से रूपांतरण के दो ऐतिहासिक प्रमाणः

- वाल्मीकिः रत्नाकर डाकू से महर्षि वाल्मीकि - नारद जी के क्षणिक सत्संग ने लूटपाट करने वाले को रामायण का रचयिता बना दिया। यह संग का प्रभाव है।

- अंगुलिमालः ११११ हत्याएं करने वाला डाकू - भगवान बुद्ध के केवल कुछ मिनटों के संग और 'मैं तो रुक गया, तुम कब रुकोगे' वाक्य ने हृदय परिवर्तन कर दिया और वही अंगुलिमाल भिक्षु बन गया।

निष्कर्ष: आज के डिजिटल युग में संग का अर्थ केवल भौतिक संग नहीं, सोशल मीडिया, व्हाट्सएप ग्रुप, यूट्यूब चैनल भी संग हैं। जैसा फीड देखेंगे, वैसी वृत्ति बनेगी। इसलिए व्यवहार शुद्धि के लिए महापुरुषों, वैष्णवों, सकारात्मक लोगों का संग अनिवार्य है।

भारत में तेजी से बढ़ेगी बुजुर्गों की आबादी मूडीज ने इस सदी को लेकर जारी की बड़ी रिपोर्ट

भारत की आयु संरचना में बदलाव शुरू हो गया है और प्रजनन दर उस स्तर से नीचे आ गई है, जिससे आबादी लंबे समय में स्थिर बनी रहती है। इससे इस सदी के उत्तरार्ध में देश की आबादी काफी उम्रदराज हो सकती है।

भारत की आयु संरचना में बदलाव शुरू हो गया है और प्रजनन दर उस स्तर से नीचे आ गई है, जिससे आबादी लंबे समय में स्थिर बनी रहती है। इससे इस सदी के उत्तरार्ध में देश की आबादी काफी उपद्रव हो सकती है। साख तय करने वाली एजेंसी मूडीज रेटिंग्स ने मंगलवार को यह बात कही।

आबादी में वृद्धि लंबे समय से आर्थिक वृद्धि और साख के लिए अनुकूल रही है, लेकिन प्रजनन दर में गिरावट अब इस तस्वीर को बदल रही है। कम श्रमिकों के कारण उत्पादन क्षमता सीमित होगी, जबकि कम परिवार और उपभोक्ताओं से मांग कमजोर होगी। इसके परिणामस्वरूप, देशों को आर्थिक वृद्धि बनाए रखने के लिए उत्पादकों पर अधिक निर्भर रहना होगा। मूडीज ने कहा कि वैश्विक प्रजनन दर 1950 में प्रति महिला 4.9 बच्चे थी जो अब घटकर करीब 2.2 रह गई है। यह 2.1 के प्रतिस्थापन स्तर से केवल थोड़ी अधिक है।



**भारत में तेजी से बढ़ेगी
बुजुर्गों की आबादी,**

मूडीज ने इस सदी को
लेकर जारी की बड़ी रिपोर्ट

MOODY'S



[/dharamkeshari](https://www.facebook.com/dharamkeshari) [/punjabkesaridharm](https://www.instagram.com/punjabkesaridharm) [/punjabkesaridharm](https://www.facebook.com/punjabkesaridharm)

मूडीज़ ने वैश्विक जनसंख्या पर अपनी रिपोर्ट में कहा, 'दुनिया की कई जगहों से बढ़ी अर्थव्यवस्थाएं एक ही समय में उमड़ना हो रही हैं। वास्तव में, दुनिया की 70 प्रतिशत से अधिक आबादी अब ऐसे देशों में रहती है जहां प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर पर या उससे नीचे है। यानी प्रजनन दर उस स्तर से नीचे आई है, जिससे आबादी लंबे समय में स्थिर बनी रहती है।' जापान में आबादी की आयु संरचना सबसे अधिक उमड़ना है।

वहां करीब 30 प्रतिशत आबादी 65 वर्ष से अधिक उम्र की है और लगभग 11 प्रतिशत 15 वर्ष से कम उम्र की है। दक्षिण कोरिया उसके करीब है, जबकि चीन भी तेजी से इसी दिशा में बढ़ रहा है। ब्राज़ील, भारत, थाईलैंड और तुर्किये समेत उपरते बाजार भी इसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। मूडीज़ ने कहा, 'हालांकि, भारत की आबादी अभी अपेक्षाकृत युवा है, लेकिन जनजन दर पहले ही प्रतिस्थापन स्तर से नीचे आ चुकी है और देश की आयु संरचना में बदलाव शुरू हो गया है।'

आंगन मिलन सेवा माँड्यूल के तहत तीन दिवसीय कार्यक्रम का हुआ समापन

-खंड बहादुरगढ़ (ग्रामीण व शहरी) क्षेत्रों के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों पर तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन आंगनबाड़ी वर्कर्स और हेल्पर्स का हुआ सम्मान



-12 हजार 349 महिला व अन्य लाभार्थियों ने लिया भाग, स्वस्थ खान-पान और सरकारी सेवाओं और योजनाओं की दी जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़, 30 सितंबर | जिलाभर में

डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में आगामी 17 अक्टूबर तक चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत बुधवार को भी 'आंगन मिलन सेवा' माँड्यूल के अंतर्गत खंड बहादुरगढ़ के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों में गतिविधियाँ जारी रहीं। तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन नगर परिषद की चेरपरपर्सन सरोज राठी ने आंगनवाड़ी केंद्रों पर लाभार्थियों से संवाद

किया। उन्होंने महिलाओं को पोषण, बच्चों की वृद्धि एवं विकास, स्वस्थ खान-पान और अच्छे व्यवहार के लिए प्रेरित किया। आंगनवाड़ी केंद्रों पर पोषण गतिविधियों से रूबरू हो रही महिलाएं डीपीओ नेहा दहिया ने बताया कि तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान आंगनवाड़ी केंद्रों के लाभार्थियों से संवाद करते हुए उन्हें बच्चों के उचित पोषण, वृद्धि एवं विकास तथा

स्वस्थ जीवनशैली के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। साथ ही गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के लिए संतुलित एवं पौष्टिक आहार के संबंध में भी जानकारी दी गई।

उन्होंने बताया कि खंड बहादुरगढ़ (ग्रामीण) के 144 तथा शहरी क्षेत्र के 100 आंगनवाड़ी केंद्रों में आयोजित गतिविधियों में खंड बहादुरगढ़ ग्रामीण से

6452 तथा खंड बहादुरगढ़ शहरी क्षेत्र से 5897 लाभार्थियों ने भाग लिया। इस प्रकार दोनों खंडों में कुल 12,349 लाभार्थियों ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

महिलाओं के कल्याण को लेकर सरकारी योजनाओं की भी दी जरूरी जानकारी

डीपीओ ने बताया कि कार्यक्रमों के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग की

टीमों द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे में भी लाभार्थियों को जानकारी दी गई। इनमें प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना, मुख्यमंत्री मातृत्व एवं शिशु कल्याण योजना तथा आंगनवाड़ी आधारित स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी योजनाओं की जानकारी शामिल रही। महिलाओं को पोषण और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति लगातार किया जा रहा

जागरूक डीपीओ ने बताया कि 'आंगन मिलन सेवा' माँड्यूल के माध्यम से आंगनवाड़ी केंद्रों को पोषण, स्वास्थ्य, योग एवं स्वस्थ जीवनशैली संबंधी जागरूकता का केंद्र बनाया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य लाभार्थियों को स्वास्थ्यवर्धक आदतों को अपनाने तथा बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य एवं विकास के लिए जागरूक करना है।

कैंप के माध्यम से सरलता से मिल रही योजनाओं की जानकारी, पात्र नागरिक आगे बढ़कर उठाएं लाभ : रचिता जून

सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र लोगों तक पहुंचाने को बहादुरगढ़ में सेवा सेतु कैंप आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़, 30 सितंबर जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत आमजन को विभिन्न सरकारी सेवाओं एवं जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से विभिन्न जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं। इसी कड़ी में बुधवार को बहादुरगढ़ में एक दिवसीय सेवा सेतु कैंप का आयोजन किया गया। पंचायत समिति बहादुरगढ़ अध्यक्ष रचिता जून ने कैंप का अवलोकन किया। इस अवसर पर नगर परिषद चेरपरपर्सन सरोज राठी, विद्या देवी व नुकुल कौशिक भी मौजूद रहे।

इस अवसर पर पंचायत समिति अध्यक्ष रचिता जून ने कहा कि सेवा सेतु कैंप का मुख्य उद्देश्य सरकारी योजनाओं एवं सेवाओं को आमजन तक सहज, सरल और सुगम तरीके से पहुंचाना है। ऐसे कैंप के माध्यम से नागरिकों को एक ही स्थान पर विभिन्न विभागों की योजनाओं की जानकारी मिलने के साथ-साथ पात्रता एवं आवेदन प्रक्रिया को समझने में भी सुविधा मिलती है। उन्होंने कहा कि सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित किए जा रहे सेवा सेतु कैंप जनकल्याणकारी योजनाओं को पात्र लाभार्थियों तक पहुंचाने की दिशा में महत्वपूर्ण कड़ी साबित हो रहे हैं। उन्होंने नागरिकों से आह्वान किया कि वे कैंप में पहुंचकर सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करें और पात्रता के अनुसार उनका लाभ उठाएं।



कैंप में विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल लगाए गए, जहाँ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नागरिकों को विभागीय योजनाओं, सरकारी सेवाओं और जनकल्याणकारी कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान पात्र नागरिकों को योजनाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया गया तथा उनकी जिज्ञासाओं एवं

समस्याओं का मौके पर समाधान करने का प्रयास किया गया। आयुष विभाग की ओर से नागरिकों को आयुष पद्धति एवं स्वास्थ्य संरक्षण से संबंधित जानकारी भी प्रदान की गई। इस अवसर पर बीडीपीओ परमजीत सिंह, दया किशन, सुदेश रंगा, जोगिंदर, पंकज सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

सेवा मेरा योगदान थीम पर आईटीआई गुढ़ा में पौधारोपण कार्यक्रम

— 345 प्रशिक्षार्थियों व स्टाफ सदस्यों ने पौधे रोपकर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

झज्जर, 30 सितंबर डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा मेरा योगदान थीम पर राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, झज्जर एट गुढ़ा में बुधवार को पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के 345 प्रशिक्षार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे।

आईटीआई प्रधानाचार्य जीतपाल ने बताया कि पौधा रोपण के दौरान विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए अधिक से अधिक पौधे लगाने और लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल करने के लिए प्रेरित किया गया।

इस अवसर पर युवाओं को पेड़-पौधों के महत्व तथा स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण के लिए हरियाली बढ़ाने की आवश्यकता के बारे में भी जागरूक किया गया।

उन्होंने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में युवाओं की सहभागिता ने 'सेवा मेरा योगदान' की भावना को मजबूत किया। पौधारोपण के माध्यम से न केवल पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया, बल्कि प्रशिक्षार्थियों को प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए भी प्रेरित किया गया।

नोडल अधिकारी जीतपाल ने बताया कि संस्थान परिसर में सेवा संकल्प अभियान के तहत जन-जागरूकता,



स्वच्छता, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण

तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़ी

गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं।

सफाई मित्र स्वच्छता व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी : एडीसी 'सेवा मेरा योगदान' थीम पर सफाई मित्रों के स्वास्थ्य की हुई जांच

'सेवा संकल्प अभियान' के तहत जिलेभर के स्वास्थ्य संस्थानों में आयोजित हुए विशेष स्वास्थ्य जांच शिविर, 439 सफाई कर्मचारियों ने कराया स्वास्थ्य परीक्षण

झज्जर, 30 सितंबर।

जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के दिशा-निर्देशानुसार 17 अक्टूबर तक चलाए जा रहे 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत 'सेवा मेरा योगदान' थीम पर विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं। इसी कड़ी में बुधवार को जिलाभर के स्वास्थ्य संस्थानों में सफाई कर्मियों के सम्मान, स्वास्थ्य और कल्याण को समर्पित विशेष स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किए गए। इन शिविरों में लगभग 439 सफाई कर्मचारियों के स्वास्थ्य की जांच की गई। वहीं गांव हसनपुर में आयोजित कार्यक्रम में एडीसी जगनवास ने सफाई मित्रों को सम्मानित किया।

एडीसी जगनवास ने कहा कि सफाई मित्र समाज की स्वच्छता व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ एवं बीमारियों से मुक्त रखने में उनका योगदान बेहद महत्वपूर्ण है। ऐसे में उनके स्वास्थ्य की

नियमित देखभाल करना सामूहिक जिम्मेदारी है। इसी उद्देश्य से जिले में विशेष स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। दूसरी ओर जिला परिषद के सीईओ मनीष फोराट ने बताया कि बुधवार को स्वास्थ्य जांच शिविरों में विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीमों ने सफाई कर्मचारियों की स्वास्थ्य जांच की गई। इस दौरान सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण के साथ रक्तचाप (बीपी), ब्लड शुगर सहित आवश्यक जांच की गई। जांच के उपरांत जरूरत के अनुसार सफाई मित्रों को निःशुल्क दवाइयों उपलब्ध कराई गईं और चिकित्सकों द्वारा स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक परामर्श भी दिया गया।

सीईओ मनीष फोराट ने बताया कि 'सेवा मेरा योगदान' अभियान का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए सेवा और जनकल्याण की भावना को मजबूत करना है। सफाई कर्मियों के स्वास्थ्य की जांच के लिए आयोजित यह पहल उनके प्रति सम्मान और संवेदनशीलता का भी प्रतीक है।

इस अवसर पर वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी, स्वच्छ भारत मिशन की टीम तथा बड़ी संख्या में सफाई कर्मचारी मौजूद रहे।



स्वस्थ जीवनशैली के लिए आयुष चिकित्सा पद्धति कारगर : डॉ. सुमन

सेवा मेरा योगदान थीम पर गांव कबलाना में आयोजित हुए स्वास्थ्य एवं योग कार्यक्रम सेवा संकल्प अभियान के तहत 61 योग एवं ध्यान शिविरों में 1504 योग साधकों ने लिया भाग

झज्जर, 30 सितंबर

सेवा संकल्प अभियान के तहत डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में जनकल्याणकारी गतिविधियों का आयोजन लगातार जारी है। अभियान के अंतर्गत 'सेवा मेरा योगदान' थीम के तहत आयुष विभाग द्वारा गांव कबलाना स्थित जगन्नाथ विश्वविद्यालय परिसर में जिला स्तरीय योग एवं ध्यान शिविर और स्वास्थ्य जांच एवं योग जागरूकता संबंधी गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसके अलावा जिलाभर के स्वास्थ्य और आयुष संस्थानों में भी स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों का आयोजन हुआ। जिला झज्जर में अब तक 61 योग शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें 1504 योग साधकों ने भाग लिया।

जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. सुमन ने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के तहत बहादुरगढ़ में आयोजित सेवा सेतु कैंप में 76 लोगों ने स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया, जबकि 10 लोगों ने योग गतिविधि में भाग लिया। उन्होंने बताया कि इन शिविरों के माध्यम से आमजन को आयुष चिकित्सा पद्धति, स्वस्थ जीवनशैली और



नियमित योग के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। आयुष विभाग की टीमों द्वारा लोगों को उनकी स्वास्थ्य आवश्यकताओं के अनुसार उचित परामर्श भी दिया गया।

नागरिकों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए किया जा रहा प्रेरित

जिला योग समन्वयक डॉ. पवन देशवाल ने बताया कि 'सेवा मेरा योगदान' थीम का उद्देश्य जनभागीदारी के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग तक स्वास्थ्य एवं जनकल्याण की सेवाओं को पहुंचाना है। आयुष विभाग द्वारा लोगों को नियमित योग एवं व्यायाम करने, संतुलित आहार लेने, उचित दिनचर्या अपनाने तथा स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी दिनचर्या में छोटे-छोटे सकारात्मक बदलाव करके स्वयं के साथ-साथ समाज के स्वास्थ्य में भी



अपना योगदान दे सकता है। सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से आयुष विभाग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य जागरूकता और योग को जन-जन तक पहुंचाने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है।

अगले वर्ष से मेडिकल प्रवेश परीक्षा सीबीटी मोड में



डॉ. विजय गर्ग



लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र

आधिकारियों के अनुसार, शिक्षा मंत्रालय राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत और परीक्षा-मानक CBT अवसंरचना रणनीति तैयार करने पर काम कर रहा है, जिससे ऑफलाइन परीक्षा से ऑनलाइन परीक्षा की ओर सुचारु रूप से बढ़ा जा सके। इसका उद्देश्य केवल कागज की जगह कंप्यूटर का उपयोग करना नहीं है, बल्कि ऐसी विश्वसनीय, मानकीकृत और सुलभ परीक्षा व्यवस्था तैयार करना है, जो लाखों विद्यार्थियों की परीक्षा को सुरक्षित और व्यवस्थित ढंग से संचालित कर सके।

लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र

भाषा सीखने की शुरुआत अक्सर व्याकरण से होती है। हम संज्ञा, क्रिया, काल, आर्टिकल, संबंधबोधक, वाक्य-रचना और शुद्धता के नियम सीखते हैं। व्याकरण निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भाषा को ढाँचा देती है और हमें स्पष्ट रूप से संवाद करने में मदद करती है। लेकिन भाषा केवल नियमों का समूह नहीं है। व्याकरण हमें वाक्य बनाना सिखाती है; लेकिन विचार यह निर्धारित करता है कि वह वाक्य क्या अर्थ रखता है।

कोई व्यक्ति सैकड़ों व्याकरणिक नियम जानता हो सकता है, फिर भी अपने विचार को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में कठिनाई महसूस कर सकता है। दूसरी ओर, कोई व्यक्ति सरल भाषा का प्रयोग कर सकता है, कभी-कभी व्याकरणिक गलती भी कर सकता है, लेकिन उसका विचार इतना प्रभावशाली हो सकता है कि लोग उसे आसानी से समझ लें और याद रखें।

यह अंतर बताता है कि भाषा केवल एक तकनीकी कौशल नहीं है। यह विचारों, भावनाओं, कल्पना और मानवीय संबंधों का माध्यम है।

व्याकरण नींव है, मंजिल नहीं

व्याकरण वह ढाँचा प्रदान करती है जिसमें शब्द एक-दूसरे से सही ढंग से जुड़ते हैं। व्याकरण की कुछ समझ के बिना संवाद भ्रमित करने वाला हो सकता है। इसलिए विद्यार्थियों के लिए शब्द-भंडार, वाक्य-रचना, विराम-चिह्न और भाषा के सही प्रयोग की मजबूत नींव आवश्यक है।

आयोजित करती है।

JEE-Main, कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (CUET-UG और PG), UGC-NET तथा CSIR-UGC-NET जैसी परीक्षाएं CBT मोड में आयोजित की जाती हैं। इसलिए NEET को ऑनलाइन प्रणाली में स्थानांतरित करने की योजना पहले से मौजूद राष्ट्रीय परीक्षा अनुभव और तकनीकी ढांचे पर आधारित हो सकती है।

शिक्षा मंत्रालय ऐसी व्यापक अवसंरचना रणनीति पर विचार कर रहा है, जिसके अंतर्गत देशभर के परीक्षा केंद्रों के लिए तकनीकी और संचालन संबंधी मानक निर्धारित किए जा सकें। इससे उन क्षेत्रों में भी परीक्षा केंद्रों की उपलब्धता बढ़ाने में मदद मिल सकती है, जहां वर्तमान में उपयुक्त सुविधाएं सीमित हैं।

बुनियादी ढांचा सबसे बड़ी चुनौती

देशभर में लाखों विद्यार्थियों के लिए कंप्यूटर आधारित NEET आयोजित करना एक बड़ी प्रशासनिक और तकनीकी चुनौती होगी। परीक्षा में गांवों, छोटे शहरों और दूरदराज के जिलों से भी बड़ी संख्या में विद्यार्थी शामिल होते हैं, जहां उच्च गुणवत्ता वाले डिजिटल बुनियादी ढांचे की उपलब्धता हर जगह समान नहीं है। इसलिए राष्ट्रीय CBT रणनीति में परीक्षा केंद्रों की संख्या, पर्याप्त कंप्यूटर, बिजली की विश्वसनीय आपूर्ति, इंटरनेट कनेक्टिविटी, तकनीकी सहायता, डेटा सुरक्षा और वैकल्पिक व्यवस्थाओं जैसे विषयों को शामिल करना आवश्यक होगा।

परीक्षा केंद्रों का मानकीकरण भी महत्वपूर्ण होगा। देश के किसी भी हिस्से में परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को यथासंभव समान तकनीकी और परीक्षा-संबंधी सुविधाएं मिलनी चाहिए।

ग्रामीण और कम-कनेक्टिविटी वाले क्षेत्रों के

विद्यार्थी

NEET को ऑनलाइन करने से जुड़ा सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न डिजिटल समानता का है।

मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी करने वाले अनेक विद्यार्थी ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आते हैं। कुछ विद्यार्थियों को कंप्यूटर आधारित परीक्षा का पर्याप्त अनुभव नहीं हो सकता, जबकि कुछ जिलों में उपयुक्त परीक्षा केंद्रों की संख्या सीमित हो सकती है।

इसलिए NEET को CBT मोड में बदलने के साथ विद्यार्थियों को पर्याप्त तैयारी और अभ्यास का अवसर देना भी आवश्यक होगा। मॉक टेस्ट, कंप्यूटर आधारित अभ्यास परीक्षाएं और परीक्षा इंटरफेस से परिचित कराने वाले कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

कम इंटरनेट कनेक्टिविटी वाले जिलों के विद्यार्थियों तथा महिला उम्मीदवारों सहित उन समूहों पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी, जिन्हें परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में अतिरिक्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

परीक्षा सुधार केवल तकनीक तक सीमित नहीं

कंप्यूटर आधारित परीक्षा के कई संभावित लाभ हो सकते हैं, जैसे परीक्षा प्रक्रिया का बेहतर मानकीकरण, कागजी प्रश्नपत्रों से जुड़ी लॉजिस्टिक चुनौतियों में कमी और परीक्षा के बाद परिणाम प्रक्रिया को अधिक सुव्यवस्थित करना। लेकिन केवल तकनीक के इस्तेमाल से परीक्षा अपने आप निष्पक्ष और सुरक्षित नहीं हो जाती।

मजबूत साइबर सुरक्षा, प्रश्नपत्रों की सुरक्षित व्यवस्था, विश्वसनीय सर्वर, बैकअप प्रणाली और पारदर्शी परीक्षा प्रोटोकॉल भी आवश्यक होंगे। परीक्षा के दौरान तकनीकी समस्या आने पर विद्यार्थियों के हितों की रक्षा के लिए स्पष्ट और प्रभावी व्यवस्था होनी

चाहिए।

इसलिए NEET को CBT में बदलने को केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं, बल्कि व्यापक परीक्षा सुधार के रूप में देखा जाना चाहिए।

चरणबद्ध और सुविचारित बदलाव जरूरी

NEET को पेन-पेपर से CBT प्रणाली में बदलने की अंतिम रूपरेखा परीक्षा सुधारों से संबंधित उच्चस्तरीय टास्क फोर्स की सिफारिशों तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के साथ विचार-विमर्श को ध्यान में रखकर तैयार की जा सकती है।

एक सुविचारित और चरणबद्ध परिवर्तन विद्यार्थियों, शिक्षकों, कोचिंग संस्थानों और परीक्षा प्राधिकरणों को नई प्रणाली के लिए पर्याप्त समय देगा।

भारत दुनिया की सबसे बड़ी प्रतियोगी परीक्षाओं में से कुछ आयोजित करता है। जैसे-जैसे उम्मीदवारों की संख्या बढ़ रही है, वैसे-वैसे परीक्षा प्रणाली को अधिक सुरक्षित, पारदर्शी, सुलभ और तकनीकी रूप से मजबूत बनाना आवश्यक होता जा रहा है।

NEET को CBT मोड में स्थानांतरित करने का प्रस्ताव भारत की परीक्षा अवसंरचना के आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। हालांकि, इसकी सफलता केवल कंप्यूटर और तकनीक पर निर्भर नहीं करेगी। समान अवसर, विश्वसनीयता, पहुंच, सुरक्षा और सावधानीपूर्वक क्रियान्वयन इसके प्रमुख आधार होंगे।

लाखों मेडिकल अभ्यर्थियों के लिए परीक्षा प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य यही होना चाहिए कि प्रत्येक पात्र विद्यार्थी को अपनी ज्ञान और क्षमता प्रदर्शित करने का निष्पक्ष, सुरक्षित और विश्वसनीय अवसर मिले।



नई भाषा, नई पहचान और संभावनाओं के नए द्वार



लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है। यह लोगों, संस्कृतियों, विचारों और अवसरों के बीच एक सेतु है। नई भाषा सीखना केवल हमारी योग्यता में एक नया कौशल जोड़ना नहीं है, बल्कि यह दुनिया को समझने का दायरा बढ़ाता है और हमारी पहचान को एक नया आयाम देता है।

हर भाषा अपने भीतर इतिहास, परंपराएं, साहित्य और सोचने का एक अलग तरीका समेटे हुए है। जब हम कोई दूसरी भाषा सीखते हैं, तो हम एक अलग सांस्कृतिक दृष्टिकोण से दुनिया को देखने लगते हैं। हमें यह समझने में मदद मिलती है कि अलग-अलग समाज भावनाओं, रीतियों, हास्य, ज्ञान और सामाजिक मूल्यों को किस प्रकार व्यक्त करते हैं। इस अर्थ में भाषा सीखना व्यक्ति को अधिक खुले विचारों वाला और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील बना सकता है।

आज की आपस में जुड़ी दुनिया में बहुभाषिकता का महत्व लगातार बढ़ रहा है। शिक्षा, पर्यटन, व्यापार, विज्ञान, तकनीक और अंतरराष्ट्रीय सहयोग अलग-अलग भाषाई पृष्ठभूमि वाले लोगों को एक-दूसरे के करीब ला रहे हैं। जो व्यक्ति एक से अधिक भाषाओं में संवाद कर सकता है, उसके लिए अधिक लोगों से जुड़ना और विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त करना आसान हो सकता है।

नई भाषा व्यावसायिक अवसरों के द्वार भी खोल सकती है। विदेशी और क्षेत्रीय भाषाओं का ज्ञान शिक्षण, अनुवाद, पत्रकारिता, कूटनीति, ग्राहक सेवा, स्वास्थ्य सेवा, पर्यटन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और डिजिटल

संचार जैसे क्षेत्रों में उपयोगी हो सकता है। विद्यार्थियों के लिए भाषाई कौशल उनकी शैक्षिक यात्रा को मजबूत कर सकते हैं तथा उन्हें अपने परिचित भाषाई वातावरण से आगे के पाठ्यक्रमों, छात्रवृत्तियों, साहित्य और शैक्षणिक संसाधनों तक पहुंचने में सहायता कर सकते हैं।

तकनीक ने भाषा सीखने को पहले की तुलना में कहीं अधिक सुलभ बना दिया है। डिजिटल शब्दकोश, शैक्षणिक ऐप, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वीडियो, पॉडकास्ट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सीखने के उपकरण अब लाभग्राही कहीं से भी शब्दावली, उच्चारण और बातचीत का अभ्यास करने की सुविधा देते हैं। हालांकि तकनीक केवल एक साधन है; वास्तविक भाषा दक्षता के लिए नियमित अभ्यास, धैर्य और मानवीय संवाद आज भी आवश्यक हैं।

भाषा सीखना मानसिक लचीलापन भी विकसित करता है। नए शब्दों को याद रखना, अपरिचित व्याकरण को समझना और अलग-अलग भाषाओं के बीच बदलाव करना ध्यान और निरंतर अभ्यास की मांग करता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि भाषा सीखने से हमें पता चलता है कि एक ही विचार को व्यक्त करने के कई तरीके हो सकते हैं। इससे सोच में लचीलापन और संचार कौशल विकसित हो सकते हैं।

बदलते विश्व में परिदृश्य में क्षेत्रीय भाषाओं का सम्मान भी उतना ही आवश्यक है। भारत की सबसे बड़ी शक्तियों में से एक उसकी असाधारण भाषाई विविधता है। पंजाबी, हिंदी, बंगाली, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, असमिया, ओड़िया और अनेक अन्य भाषाएं समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं की प्रतिनिधि हैं। इन भाषाओं को

सीखना और संरक्षित करना सांस्कृतिक निरंतरता को मजबूत कर सकता है, जबकि अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का ज्ञान वैश्विक संपर्क का विस्तार कर सकता है।

विशेष रूप से युवाओं को अनेक भाषाओं में सहज होने का लाभ मिल सकता है। विद्यालयों में भाषाओं को केवल परीक्षा के विषय के रूप में देखने के बजाय कहानियों, बातचीत, साहित्य, संगीत, नाटक और व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से सीखने के अवसर दिए जाने चाहिए। इससे भाषा सीखना अधिक रोचक और सार्थक बन सकता है।

नई भाषा सीखने के लिए शुरुआत से ही पूर्णता आवश्यक नहीं है। गलतियाँ सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा हैं। पहला लक्ष्य संवाद करने की क्षमता विकसित करना होना चाहिए, जिसके बाद शुद्धता और आत्मविश्वास पर ध्यान दिया जा सकता है। प्रतिदिन कुछ उपयोगी शब्द सीखना भी समय के साथ महत्वपूर्ण प्रगति ला सकता है।

अंततः, हम जितनी भाषाएं सीखते हैं, दुनिया की ओर उतनी ही नई खड़कियाँ खुलती जाती हैं। प्रत्येक भाषा हमें नए लोगों, नए विचारों और नई संभावनाओं से परिचित कराती है। ऐसे समय में जब शिक्षा और तकनीक के माध्यम से दुनिया की सीमाएं लगातार जुड़ रही हैं, भाषाई क्षमता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और शैक्षिक पूंजी का रूप भी ले रही है।

नई भाषा हमें नई आवाज, व्यापक पहचान और उन अवसरों तक पहुंच दे सकती है जो अन्यथा हमारी पहुंच से बाहर रह सकते हैं। इसलिए भाषा सीखना केवल शब्द सीखना नहीं है; यह दुनिया के लिए एक नया द्वार खोलना है।

व्याकरण से परे: जहाँ शब्द विचारों से मिलते हैं

लेकिन भाषा सीखने को केवल व्याकरण के नियम याद करने तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। यदि विद्यार्थी अपना सारा समय नियम याद करने में लगा दें और अपने विचारों को व्यक्त करना न सीखें, तो भाषा की शिक्षा यांत्रिक बन जाती है। वे परीक्षा में व्याकरणिक गलतियाँ पहचान सकते हैं, लेकिन जब उन्हें कोई मौलिक विचार लिखने या बोलने के लिए कहा जाए, तो वे झिझक सकते हैं।

भाषा सीखने का वास्तविक उद्देश्य केवल व्याकरण की दृष्टि से सही वाक्य बनाना नहीं, बल्कि संवाद करना और अर्थपूर्ण ढंग से संवाद करना है।

शब्द विचारों को रूप देते हैं

हर अर्थपूर्ण वाक्य के पीछे एक विचार होता है।

बोलने या लिखने से पहले हमारे मन में कुछ होता है—कोई प्रश्न, निरीक्षण, भावना, तर्क, अनुभव या कल्पना। शब्द उस विचार को ऐसा रूप देते हैं जिसे दूसरा व्यक्ति समझ सके। इसलिए शब्द-भंडार महत्वपूर्ण है। हमारा शब्द-भंडार जितना समृद्ध होगा, हम विचारों के विभिन्न पहलुओं को उतनी ही सटीकता से व्यक्त कर पाएंगे।

उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को “खुश”, “संतुष्ट”, “उत्साहित”, “सहत महसूस करने वाला”, “क्रुद्ध” या “प्रसन्न” कहने से भावना के अलग-अलग रंग प्रकट होते हैं।

इसलिए भाषा केवल विचारों को व्यक्त नहीं करती; यह विचारों को बलवर्धित और परिष्कृत करने में भी हमारी सहायता करती है।

भाषा हमारी सोच को प्रभावित करती है

किसी विचार को शब्दों में व्यक्त करने की हमारी क्षमता इस बात को भी प्रभावित कर सकती है कि हम उस विचार को स्वयं कितना स्पष्ट समझते हैं।

कई बार कोई अस्पष्ट विचार तब स्पष्ट हो जाता है जब हम उस शब्दों में लिखने का प्रयास करते हैं। लिखना हमें अपने तर्कों को व्यवस्थित करने के लिए मजबूर करता है। किसी दूसरे व्यक्ति को कोई बात समझाने से हमारी अपनी समझ की कमियाँ भी सामने आ सकती हैं।

इसीलिए विद्यार्थियों को नियमित रूप से लिखने और बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जो विद्यार्थी केवल जानकारी दोहराते हैं, वह समय-शक्ति व्यर्थ व्यक्तित्व करता है। लेकिन जो विद्यार्थी समझाता है, प्रश्न करता है, तुलना करता है, तर्क देता है और नई रचना करता है, वह गहरी बौद्धिक क्षमता विकसित करता है।

भाषा ज्ञान और समझ के बीच एक पुल बन जाती है।

संवाद केवल शुद्धता नहीं है

प्रभावी संवाद में केवल व्याकरणिक शुद्धता ही शामिल नहीं होती।

लहजा, संदर्भ, सुनने वाला व्यक्ति, समय और बोलने वाले की मंशा—ये सभी अर्थ को प्रभावित करते हैं।

एक ही वाक्य एक परिस्थिति में सम्मानजनक और दूसरी परिस्थिति में रूखा लग सकता है। एक छोटा-सा उत्तर आत्मविश्वास, गुस्सा, उदासीनता या हास्य का संकेत दे सकता है।

इसलिए अच्छे संचारक केवल यह नहीं सीखते कि क्या कहना है, बल्कि यह भी सीखते हैं कि कैसे, शक्ति और क्यों

कहना है।

डिजिटल युग में यह और भी महत्वपूर्ण हो गया है, जहाँ संवाद अक्सर छोटे संदेशों, टिप्पणियों और पोस्ट तक सीमित हो जाता है। चेहरे के भाव और आवाज के लहजे के बिना शब्द आसानी से गलत समझे जा सकते हैं।

पढ़ना हमें व्याकरण से आगे ले जाता है

पढ़ना भाषा और सोच को एक साथ विकसित करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है।

अच्छी पुस्तक हमें नए विचारों, संस्कृतियों, अनुभवों और दृष्टिकोणों से परिचित कराती है। यह स्वाभाविक रूप से शब्द-भंडार बढ़ाती है और साथ ही हमारी सोच की दुनिया को भी विस्तृत करती है।

जब विद्यार्थी कहानियाँ, जीवनियाँ, लेख, वैज्ञानिक सामग्री, इतिहास और साहित्य पढ़ते हैं, तो वे अलग-अलग तरीकों से सोचना सीखते हैं।

इसलिए पढ़ने को केवल परीक्षा की तैयारी का साधन नहीं समझना चाहिए। जो बच्चा व्यापक रूप से पढ़ता है, वह केवल अधिक शब्द नहीं सीखता; वह दुनिया को देखने के अधिक तरीके सीखता है।

लिखना विचारों को ढाँचा देता है। लिखना भाषा और विचार के मिलन का सबसे स्पष्ट रूप है।

जब हम लिखते हैं, तो हमें तय करना पड़ता है कि क्या कहना है, विचारों को किस क्रम में रखना है और कौन-से शब्द हमारे अर्थ को सबसे अच्छी तरह व्यक्त कर सकते हैं। यह प्रक्रिया सोच में अनुशासन पैदा करती है।

विद्यार्थियों को केवल निर्धारित प्रश्नों के उत्तर लिखने तक सीमित नहीं करना चाहिए।

उन्हें डायरी लिखने, छोटे लेख लिखने, अपने निरीक्षण दर्ज करने, वैज्ञानिक अवधारणाओं को अपने शब्दों में समझाने, कहानियाँ लिखने और सामाजिक मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

हर बार उद्देश्यपूर्ण व्याकरण नहीं होना चाहिए। पहला उद्देश्य स्पष्ट और स्वतंत्र सोच विकसित करना होना चाहिए। इसके बाद व्याकरण उस विचार को अधिक सुंदर और सटीक बनाने का माध्यम बन सकती है।

गलतियाँ सीखने का हिस्सा हैं

व्याकरणिक गलतियों के डर से संवाद रुकना नहीं चाहिए।

जो विद्यार्थी हर समय गलती करने से डरते हैं, वे बोलने में हिंजलक सकते हैं। उन्हें उतर पता होने के बावजूद यह डर हो सकता है कि कहीं वे गलत न बोल दें। यहाँ शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

गलतियों को सुधारा जाना चाहिए, लेकिन इस तरह नहीं कि विद्यार्थी का आत्मविश्वास ही समाप्त हो जाए। विद्यार्थी को समझना चाहिए कि गलतियाँ भाषा सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा हैं।

कक्षा ऐसी जगह होनी चाहिए जहाँ विद्यार्थी प्रयास कर सकें, गलती कर सकें, मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें और फिर से प्रयास कर सकें।

आत्मविश्वास संवाद को जन्म देता है; संवाद अभ्यास पैदा करता है; और अभ्यास शुद्धता को बेहतर बनाता है।

तकनीक और भाषा का

बदलता रूप

डिजिटल संवाद भाषा के प्रयोग को बदल रहा है।

इमोजी, संक्षिप्त शब्द, वॉइस मैसेज, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति के नए रूप पैदा किए हैं। मानव संवाद के बदलने के साथ भाषा भी लगातार बदल रही है।

इसका अर्थ यह नहीं कि व्याकरण का महत्व कम हो गया है। इसके बजाय भाषा के प्रति जागरूकता और भी महत्वपूर्ण हो गई है।

विद्यार्थियों को समझना चाहिए कि अलग-अलग संदर्भों के लिए भाषा के अलग-अलग रूप आवश्यक होते हैं। मित्र को भेजा जाने वाला संदेश, वैज्ञानिक रिपोर्ट, नौकरी के लिए आवेदन और औद्योगिक भाषण एक ही तरीके से नहीं लिखे जा सकते।

इसलिए भाषा शिक्षा को केवल शुद्धता ही नहीं, बल्कि संदर्भ के अनुसार ढलने की क्षमता भी सिखानी चाहिए।

शिक्षक की भूमिका

भाषा शिक्षक केवल व्याकरणिक गलतियाँ खोजने वाला व्यक्ति नहीं होता।

एक अच्छा शिक्षक विद्यार्थियों को शब्दों की शक्ति को खोजने में मदद करता है।

शिक्षक प्रश्नों, विचार-विमर्श, वाद-विवाद, कहानी-कथन, प्रस्तुतियों, रचनात्मक लेखन और पठन को प्रोत्साहित कर सकते हैं। वे विद्यार्थियों से पाठ्यपुस्तक की पंक्तियाँ दोहराने के बजाय अपने शब्दों में विचार समझाने के लिए कह सकते हैं।

जब विद्यार्थी भाषा का प्रयोग अपने मौलिक विचार व्यक्त करने के लिए

करने लगते हैं, तो भाषा सीखना अधिक अर्थपूर्ण बन जाता है।

शिक्षक का काम विद्यार्थी को “सही उत्तर क्या है?” से आगे ले जाकर “मैं क्या सोचता हूँ और इसे स्पष्ट रूप से कैसे व्यक्त कर सकता हूँ?” तक पहुँचाना है।

भाषा और मानवीय संबंध

अंततः भाषा मनुष्यों के लिए है। हम शब्दों का प्रयोग ज्ञान साझा करने, प्रेम व्यक्त करने, असहमति दूर करने, दूसरों को हौसला देने, प्रेरित करने और संबंध बनाने के लिए करते हैं। व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण वाक्य भी खाली महसूस हो सकता है यदि उसमें समझ और संवेदन न हो।

संवाद तब शक्तिशाली बनता है जब भाषा के पीछे मानवीय भावना और उद्देश्य होता है।

एक डॉक्टर मरीज को समझाता है, एक शिक्षक विद्यार्थी को प्रोत्साहित करता है, माता-पिता बच्चे को सलाह देते हैं या कोई नेता लोगों को संबोधित करता है—इन सभी में शब्द सामान्य हो सकते हैं, लेकिन उन्हें अर्थपूर्ण बनती है उनके पीछे की सोच, ईमानदारी और उद्देश्य।

शिक्षा को व्याकरण से आगे जाना होगा

विद्यालयों में व्याकरण अवश्य सिखाई जानी चाहिए। विद्यार्थियों को भाषाई शुद्धता, अनुशासन और स्पष्टता की आवश्यकता है।

लेकिन शिक्षा यहाँ समाप्त नहीं होनी चाहिए।

विद्यार्थियों को यह भी सिखाया जाना चाहिए कि वे:

- स्वतंत्र रूप से सोचें;

- अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करें;
- ध्यानपूर्वक सुनें;
- विभिन्न दृष्टिकोणों को समझें;
- जानकारी पर प्रश्न करें;
- संवेदनशीलता के साथ संवाद करें;
- रचनात्मक लेखन करें;
- आत्मविश्वास के साथ बोलें; और
- संदर्भ के अनुसार भाषा का प्रयोग करें।

ये क्षमताएँ केवल परीक्षाओं के लिए ही नहीं, बल्कि करियर, संबंधों, नेतृत्व और अर्थपूर्ण विचार व्यक्त करता है, भाषा तब अर्थपूर्ण बनती है जब वह एक मन को दूसरे मन से जोड़ती है।

व्याकरण से परे विचारों, कल्पना, भावनाओं और मानवीय समझ की एक विशाल दुनिया है। वास्तविक संवाद की शुरुआत वहीं से होती है।

लंबे समय से कब्जे वाली जमीन के पट्टे की मांग, बामरा तहसील कार्यालय के सामने धरना



डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र संबलपुर, 29 सितंबर

बामरा तहसील क्षेत्र में लंबे समय से कब्जे में बताई जा रही जमीन के स्वामित्व और उपयोग को लेकर विवाद सामने आया है। अपने परिवार के नाम जमीन का खातियान एवं पट्टा जारी

करने की मांग को लेकर करीब 50 वर्षीय देवानंद पात्र सोमवार को परिवार के सदस्यों के साथ बामरा तहसील कार्यालय के सामने धरने पर बैठ गए। परिवार का कहना है कि वर्षों से जमीन पर उनका कब्जा और उपयोग रहा है, लेकिन राजस्व अभिलेखों में उनके नाम दर्ज नहीं होने के कारण उन्हें कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

परिवार के अनुसार, वर्ष 1984 से दो प्लॉटों को मिलाकर करीब 3.64 एकड़ जमीन पर उनका कब्जा है। उनका दावा है कि लंबे समय से जमीन का उपयोग करने के बावजूद अब तक उनके नाम पर आवश्यक राजस्व दस्तावेज जारी नहीं किए

गए हैं। इसी मांग को लेकर परिवार ने तहसील प्रशासन के समक्ष अपनी बात रखी और धरना दिया। मामले ने उस समय दूसरा मोड़ ले लिया, जब मकर महोत्सव समिति ने भी संबंधित जमीन को लेकर अपनी अलग मांग सामने रखी। समिति के सदस्यों के अनुसार, उक्त स्थान पर लगभग 30-34 वर्षों से पारंपरिक मकर मेला आयोजित होता आ रहा है। समिति का कहना है कि यदि जमीन किसी व्यक्ति के निजी नाम पर दर्ज कर दी गई तो भविष्य में सार्वजनिक आयोजन और मकर मेले के संचालन पर असर पड़ सकता है। इसलिए समिति ने जमीन को निजी स्वामित्व में देने के बजाय

सरकारी खाते में सुरक्षित रखने की मांग की है। इस तरह एक ही जमीन को लेकर एक ओर परिवार अपने दीर्घकालीन कब्जे के आधार पर पट्टा देने की मांग कर रहा है, जबकि दूसरी ओर मकर महोत्सव समिति इसे सार्वजनिक उपयोग की जमीन के रूप में सुरक्षित रखने की मांग कर रही है। मामले में बामरा तहसील प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि जमीन से संबंधित कार्रवाई सरकारी नीति, राजस्व नियमों और उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर की जाएगी। राजस्व विभाग की भूमि संबंधी सेवाओं और अभिलेखों का निस्तारण तहसील स्तर पर किया जाता है।



अंतरमन का संगीत और आत्म-शांति की खोज

लेखक— हरिओम बाजपेई 'नादान', परिवहन विशेष समाचार पत्र

मनुष्य का जीवन बाहर की भागदौड़ और सांसारिक चकाचौंध में इतना उलझ गया है कि वह अपने ही अंतरमन के संगीत को सुनना भूल चुका है। आज का मानव संसार को जीतने की होड़ में लगा है, किंतु अपने ही भीतर पराजित महसूस करता है। 'तेरा-मेरा' और सांसारिक वस्तुओं के प्रति अंधा भटकाव ही आधुनिक मनुष्य के समस्त दुखों की मूल जड़ है। मन को शांति तब तक प्राप्त नहीं हो सकती जब तक हम उसे बाहरी इच्छाओं, तृष्णाओं और अपेक्षाओं से बांधकर रखेंगे। शांति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो किसी भीौतिक सफलता या धन-दौलत से प्राप्त हो सके; यह तो एक आंतरिक अवस्था है। जब मन 'तेरा-मेरा' की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर संतोष और स्वीकार भाव को अपनाता है, तब अशांति के बादल स्वतः छंटने लगते हैं।

यदि इस विषय का गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक विश्लेषण करें, तो यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक मानव का संकट साधनों की कमी का नहीं, बल्कि भ्रमित चेतना का है। मनुष्य ने अपनी पहचान अपने विचारों, पद, प्रतिष्ठा और भौतिक संबंधों से इस सीमा तक जोड़ ली है कि वह स्वयं को एक

स्वतंत्र आत्मा के रूप में देखना ही भूल गया है। चारों ओर जो अशांति दिखती है, वह केवल बाहरी कोलाहल नहीं, बल्कि मन के भीतर अनवरत चलने वाली तुलना, भय और अनिश्चित महत्वाकांक्षाओं की गुंज है। 'तेरा-मेरा' का भाव नश्वर को शाश्वत मान लेने का मौलिक अज्ञान है। संसार की हर वस्तु, परिस्थिति और यह देह स्वयं परिवर्तनशील है। जब हम इन नाशवान चीजों में स्थायी सुख तलाशते हैं, तो निराशा ही हाथ आती है। वास्तविक शांति वस्तुओं को छोड़ने में नहीं, बल्कि उनके प्रति अपने मोह और स्वामित्व के भाव को शिथिल करने में है। इस भटकाव से निकलने का मार्ग संसार को छोड़कर भागना नहीं, बल्कि 'साक्षी भाव' को साधना है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति अपने सभी सांसारिक कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा से करे, किंतु भीतर से एक तटस्थ द्रष्टा की भांति अपने विचारों और भावनाओं को बहते हुए देखे। जैसे जल में रहकर भी कमल का पत्ता जल से अछूता रहता है, ठीक



वैसे ही संसार में रहते हुए भी आंतरिक समता को बनाए रखना ही अंतरमन के संगीत को सुनने की कुंजी है। इसके लिए जीवन में मौन, ठहराव और आत्म-निरीक्षण को स्थान देना अनिवार्य है। प्रतिदिन कुछ क्षण स्वयं के साथ बैठकर यह विचार करना आवश्यक है कि यह अमूल्य जीवन वास्तव में किस उद्देश्य के लिए मिला है। आत्मा को केवल प्रेम, सहजता और आत्म-साक्षात्कार की चाह है। जब विचारों और कामनाओं का शोर शांत होता है, तब वह परम शांति स्वयं भीतर प्रकट हो जाती है।

कब तक असुरक्षित रहेगी नारी शक्ति

लेखक डॉ. वेदप्रकाश, परिवहन विशेष समाचार पत्र

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली एनसीआर के संवेदनशील इलाकों का सुरक्षा ऑडिट करने का आदेश दिया है। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट ने पिछले दिनों दिल्ली एनसीआर में घटी दुष्कर्म की घटना और महिला सुरक्षा पर चिंता जताते हुए स्वतः संज्ञान लेकर यह आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा है कि केवल चिंता जताने तक सीमित रहने के बजाय जमीन पर सुरक्षा व्यवस्था सुधारने के लिए समयबद्ध कदम उठाए जाने चाहिए। कोर्ट ने पुलिस को चार सप्ताह के भीतर संवेदनशील इलाकों का सर्वे करने, ऐसे संवेदनशील क्षेत्रों का नक्शा तैयार करने, पुलिस गश्त बढ़ाने और खराब स्ट्रीट लाइट व सीसीटीवी को दुरुस्त करने के आदेश दिए हैं।

गौरतलब है कि विगत कुछ दिनों में महिलाओं के साथ छेड़छाड़ एवं दुष्कर्म की घटनाएं लगातार सामने आई हैं। ताजा मामले दिल्ली के कालकाजी, मुखर्जी नगर, बिहार के जमुई, समस्तीपुर, आरा, बांका, उत्तरप्रदेश के प्रयागराज और पंजाब के हैं। जहां अलग-अलग घटनाओं में बालिंग और नाबालिंग लड़कियों के साथ दुष्कर्म, छेड़छाड़ एवं मारपीट की घटनाएं सामने आई हैं।

दिल्ली, पंजाब एवं देश के विभिन्न शहरों में इन घटनाओं के विरोध में लगातार धरने-प्रदर्शन भी हो रहे हैं। कहीं धनबल, कहीं बाहुबल तो कहीं पदबल के कारण अपराधी बच निकलते हैं अथवा जांच में उन्हें बचा दिया जाता है और धरने-प्रदर्शन करने वालों के हिस्से में केवल आश्वासन

आता है, पीड़ित को न्याय नहीं मिलता। विडंबना यह है कि जिस देश में- यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमते तत्र देवता कहकर नारियों की पूजा की जाती है, नवरात्र पक्ष में लड़कियों को देवी मानकर कन्या पूजन किया जाता है, नारी शक्ति को गृह लक्ष्मी का दर्जा दिया जाता है और जिस देश में लगभग पिछले एक दशक से बेटी बचाओ-बेटी बचाओ का अभियान चल रहा है। वहां नारी शक्ति असुरक्षित है।

जब देश की राजधानी में ही महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं तो अन्य हिस्सों में किस प्रकार उनकी सुरक्षा सुनिश्चित हो सकती है। महत्वपूर्ण यह भी है कि साइना नेहावल, विथ्या रामराज, ईशा सिंह, अनाहत सिंह, मेरीकाम, ललवीला आदि के साथ-साथ कबड्डी, क्रिकेट एवं विभिन्न खेलों में बेटीयां लगातार वैश्विक रिकॉर्ड बना रही हैं। वे किसी से पीछे नहीं हैं। घर के आंगन से लेकर अंतरिक्ष तक वे शिखर पर पहुंचने का प्रयास कर रही हैं। विद्यालयों और महाविद्यालयों में भी बेटीयों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वे शिक्षा के क्षेत्र में शिखर की ओर हैं, लेकिन न तो वे घर में सुरक्षित हैं, न शिक्षण संस्थानों में, न ही कार्यलयों में और न ही राह-रास्तों में। प्रश्न आज भी यह है कि बंगाल के आर. जी. कर अस्पताल में दुर्कर्म और फिर हत्या की शिकार उस बेटी को न्याय कब मिलेगा? भारत सरकार ने नारी सशक्तिकरण, सम्मान तथा सुरक्षा के संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने के लिए तथा महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों को ध्यान में रखते हुए अध्यादेश लाकर यह प्रतिबन्धन किए हैं कि- 12 वर्ष से कम उम्र की बच्चियों के साथ

परिवहन विशेष - राष्ट्रीय दैनिक विश्वसनीय निष्पक्ष

1 October 2026 | वीरवार

कब तक असुरक्षित रहेगी नारी शक्ति?

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली NCR के संवेदनशील इलाकों का सुरक्षा ऑडिट करने का आदेश दिया

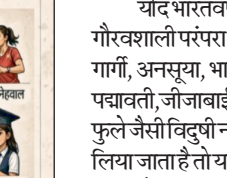
अमेक - डॉ. वेदप्रकाश | परिवहन विशेष



सुप्रीम कोर्ट, नई दिल्ली - सुप्रीम कोर्ट और



राज्य सरकार - NCTV - सुप्रीम कोर्ट और



अमेक - डॉ. वेदप्रकाश

1) सुप्रीम कोर्ट आदेश:

2) ताजा घटनाएं:

3) विरोधभास:

4) समाधान:

"नारी शक्ति है, दुर्ग है - आत्मरक्षा के लिए स्वयं सशक्त होना पड़ेगा।"

अमेक - डॉ. वेदप्रकाश | परिवहन विशेष

1 अक्टूबर 2026 वीरवार | अक्टूबर में जारी

दुष्कर्म के मामले में फांसी, 16 वर्ष से कम उम्र की बच्चियों के साथ दुष्कर्म के मामले में सजा की अवधि 10 साल से बढ़कर 20 साल। लेकिन आधी-अधूरी जांच पड़ताल और फिर न्याय व्यवस्था का लचीलापन दुष्कर्मियों को सजा नहीं दे पाता। न्यायालय में बैठे माननीय न्यायाधीश यदि वास्तव में नारी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं, यदि किसी अवोध बालिका के साथ दुष्कर्म की घटनाएं उनकी अंतरात्मा को झकझोरती है तो फिर वे अपराधी को फांसी या आजीवन कारावास क्यों नहीं देते? सीसीटीवी के कैमरे लगाने और पुलिस की गश्त से दुष्कर्म और महिलाओं के प्रति अपराध रुक

जाएंगे? ध्यान रहे कि वसिस्त भारत के संकल्प में नारी शक्ति केवल एक महत्वपूर्ण कड़ी नहीं है वह बराबर की भागीदार है। इसलिए उनकी शिक्षा, कला, कौशल, योग्यता और उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम बनाना जिसे महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना भी है। संसद में महिला आरक्षण और लखपति दीर्घा बनाने का विचार निश्चित रूप से नारी सशक्तिकरण की दिशा में बड़े संकल्प हैं लेकिन मोदी सरकार को नारी सुरक्षा की गारंटी भी देनी होगी। किसी भी महिला अथवा बेटी के साथ छेड़छाड़ अथवा दुष्कर्म की घटनाएं समाज के नैतिक पतन के साथ-साथ वर्तमान की शिक्षा

और संस्कार पर भी बड़े प्रश्न खड़े कर रहे हैं। यदि पुरुष समाज में महिलाओं के प्रति विकृतियों बढ़ रही हैं तो उसके लिए कठोर दंड का प्रविधान तत्काल किया जाना चाहिए। यदि भारतवर्ष की गौरवशाली परंपरा में सावित्री, गाँगी, अनसूया, भारती, विजया, पद्मावती, जीजाबाई, सावित्रीबाई फुले जैसी विदुषी नारियों के नाम लिया जाता है तो यह इस बात का प्रमाण है कि उस समय के समाज ने नारियों की सुरक्षा और सम्मान को सर्वोपरि रखा। उस समय की शिक्षा और संस्कार निश्चय ही उत्कृष्ट थे। क्या यह वही देश नहीं है जहां रावण द्वारा माता सीता के हरण के बाद राम ने न केवल रावण का वध किया अपितु उसकी सोने की लंका को भी मिट्टी में मिला दिया। आज यदि योगी आदित्यनाथ जैसे मुख्यमंत्री दुष्कर्मियों और कुख्यात अपराधियों के एनकाउंटर कर रहे हैं, उनकी संपत्तियों को बुलडोजर से मिट्टी में मिला रहे हैं तो क्या उस पर प्रश्न उठाने वाले भी अपराधी नहीं कहे जाने चाहिए? महिलाओं के साथ छेड़छाड़ और दुष्कर्म जैसी घटनाओं का एक बड़ा समाधान एनकाउंटर के रूप में भी अपनाया जा चाहिए। क्योंकि भय के बिना राज नहीं चल सकता। नारी शक्ति है, दुर्गा है, आज अपनी आत्मरक्षा के लिए उसे स्वयं भी सशक्त होना पड़ेगा और यदि आवश्यक हो तो हथियार उठाने से भी परहेज नहीं करना चाहिए। आज यदि राज्य और केंद्र सरकार मिलकर नारी सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध नहीं होंगे, तो विकास की राह अधूरी रहेगी और नारी सशक्तिकरण का संकल्प भी अधूरा रहेगा।

परिवहन विशेष - राष्ट्रीय दैनिक | विश्वसनीय निष्पक्ष

दिनांक 1 अक्टूबर 2026 • वीरवार | Rourkela • Bhubaneswar संस्करण

ओडिशा में ₹47 करोड़ की कोविड दवाएं बेकार, इस्तेमाल से पहले ही हो गई एक्सपायर

CAG ऑडिट में खरीद और भंडारण व्यवस्था पर गंभीर सवाल; 4,550 इंजेक्शन खरीदे गए मरीजों को लगे सिर्फ 711

BOX 1 • घोडाला:

BOX 2 • CAG कारण:

BOX 3 • जनहित सवाल:

लिपोसोमल अंफोटेरिसिन-B : 10,000 में से 550 उपयोग, 9,450 वायल बेकार

रिपोर्ट: डॉ राजकुमार यादव, राउरकेला • भुवनेश्वर | संपादक: संजय कुमार बाठला | परिवहन विशेष — 1 अक्टूबर 2026, वीरवार | जनहित में जारी

₹47 करोड़ की दवा कचरे में — जवाबदेही कब?

यह खबर CAG रिपोर्ट 2026 पर आधारित है | अधिक जानकारी: www.pariivahanvishesh.com

वायल, लगभग ₹42.21 करोड़ मूल्य के, बिना उपयोग के एक्सपायर हो गए। इसी तरह म्यूकोरमाइकोसिस यानी ब्लैक फंगस के उपचार में इस्तेमाल होने वाली लिपोसोमल अंफुटेरिसिन-B की 10,000 वायल खरीद में से केवल 550 का उपयोग हुआ और 9,450 वायल, जिनकी

कीमत करीब ₹5.21 करोड़ थी, जुलाई 2024 तक अनुपयोगी पड़ी थी। CAG ने इन मामलों के पीछे मांग का अपर्याप्त आकलन, खरीद योजना में कमियां और प्रभावी इन्वेंटरी प्रबंधन की कमी को प्रमुख कारणों के रूप में रेखांकित किया है।

ऑडिट अवधि में करीब 700 श्रेणियों की 15.43 करोड़ यूनिट दवाएं, कुल ₹167.91 करोड़ मूल्य की, एक्सपायर होने की बात भी सामने आई है। यह मामला केवल वित्तीय नुकसान का नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य संसाधनों की योजना और

जवाबदेही का भी है। महामारी जैसी आपातस्थिति में त्वरित खरीद जरूरी थी, लेकिन मांग का लगातार पुनर्मूल्यांकन, स्टॉक की निगरानी और समय रहते पुनर्वितरण जैसी व्यवस्थाएं मजबूत होतीं तो इस तरह की बर्बादी को काफी हद तक रोका जा सकता था।

सुंदरगढ़ में 'फ्लाई ऐश डंपिंग' पर फिर उठे सवाल, कनिका में ग्रामीणों ने जताई चिंता

परिवहन विशेष - राष्ट्रीय दैनिक विश्वसनीय निष्पक्ष

PARYAVARAN | JANHIT SPECIAL | Date 1 October 2026 Veerwar

अंक 1124 • मूल्य ₹5

परिवहन विशेष

सुंदरगढ़ में 'फ्लाई ऐश डंपिंग' पर फिर उठे सवाल, कनिका में ग्रामीणों ने जताई चिंता

झारसुगुड़ा वेदांता से राख लाकर कथित अवैध डंपिंग के आरोप; खेत, जलस्रोत, जंगलों के आसपास राख पहुंचने के दावों की जांच की मांग



कनिका, हेमगिरि ब्लॉक

BOX 1 • आरोप:

BOX 2 • इतिहास:

BOX 3 • ग्रामीणों की मांग:

BOX 4 • नोट:

रिपोर्ट: डॉ राजकुमार यादव, सुंदरगढ़ | परिवहन विशेष संपादक: संजय कुमार बाठला | 1 अक्टूबर 2026 वीरवार | जनहित में जारी

खेत, जंगल, बचाना है - अवैध फ्लाई ऐश डंपिंग की निष्पक्ष जांच जरूरी.

विशेष जांच रिपोर्ट • कोर्ट: हवाई ड्रोन से • जनकारी: स्थानीय ग्रामीणों से इमरूट

झारसुगुड़ा स्थित वेदांता से राख लाकर कथित अवैध डंपिंग के आरोप; खेत, जलस्रोत और जंगलों के आसपास राख पहुंचने के दावों की जांच की मांग रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र सुंदरगढ़ औद्योगिक राख यानी फ्लाई ऐश के कथित अनधिकृत परिवहन और डंपिंग को लेकर सुंदरगढ़ जिले में एक बार फिर पर्यावरणीय चिंता सामने आई है। हेमगिरि ब्लॉक के कनिका क्षेत्र में फ्लाई ऐश लाकर बिभिन्न स्थानों पर बिना सुंदरगढ़ अनुमति के डंप की जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि परिवहनकर्ताओं द्वारा स्थानीय लोगों को कथित तौर पर बिभिन्न प्रलोभन देकर

खेत-खलिहान और अन्य स्थानों पर राख डलवाई जा रही है। यह आरोप इसलिए भी गंभीर है क्योंकि दिसंबर 2024 में ओडिशा विधानसभा में राजगढ़गपुर के तत्कालीन विधायक सी.एस. राजेन एक्का ने वेदांता पर सुंदरगढ़ समेत झारसुगुड़ा और संबलपुर में बिना पूर्व अनुमति फ्लाई ऐश डंप करने का आरोप उठाया था। उस समय ओएसपीसीबी की एक नोटिस के हवाले से 7,11,653.32 टन कथित अनधिकृत फ्लाई ऐश के निस्तारण और लगभग ₹71.16 करोड़ पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति प्रस्तावित किए जा रहे थे। वहीं, अप्रैल 2026 में सुंदरगढ़ में फ्लाई ऐश से लदे 20 ट्रकों को अधिकारियों द्वारा रोके जाने की खबर भी सामने आई थी। ओएसपीसीबी के रिकॉर्ड में सुंदरगढ़

के विभिन्न क्षेत्रों में फ्लाई ऐश डंप साइटों से संबंधित आवेदन और अनुमतियों का उल्लेख मिलता है, जिससे यह स्पष्ट है कि राख के निस्तारण के लिए नियमन और अनुमति की व्यवस्था मौजूद है। अब ग्रामीणों की मांग है कि कनिका सहित जिले के उन सभी कथित डंपिंग स्थलों का भौतिक निरीक्षण, राख की उत्पत्ति और परिवहन दस्तावेजों की जांच तथा जल-मिट्टी की वैज्ञानिक जांच कराई जाए। खेतों, नालों, नदी-झरनों, जंगलों, विद्यालयों या अन्य सार्वजनिक स्थलों पर यदि वास्तव में अनधिकृत डंपिंग हुई है, तो जिम्मेदारी तय करना जरूरी होगा। OSPCB स्वयं फ्लाई ऐश के सुरक्षित उपयोग और निस्तारण के लिए अलग दिशा-निर्देश एवं SOP जारी करता है। फिलहाल ये आरोप हैं और इनकी स्वतंत्र प्रशासनिक जांच आवश्यक है।

